बी०ए० भाग - III

विषय - हिन्दी — II Paper

भाषा किसे कहते हैं?

प्रश्न - 1 भाषा-विज्ञान की परिभाषा देते हुए 'भाषा-विज्ञान' का अर्थ समझाइए।

उत्तर — भाषा का अर्थ — इसके अन्तर्गत विचार-विनिमय मुख और कान के माध्यम से होता है। इसका सम्बन्ध सीधे-सीधे ध्वनि से है। इसका रूप बहुत व्यापक है। तात्पर्य यह है कि जिस बोलने में परस्पर बातचीत की जाती है। यही भाषा है और इसे ~~इ~~ इसी संकुचित अर्थ में प्रायः प्रयुक्त किया जाता है।

आधुनिक युग में भाषा की परिभाषा विभिन्न मनीषियों ने देने का प्रयास किया है।

सामान्यतः भाषा उसे मानते हैं जिसके माध्यम से हम अपने विचार या भाव दूसरों तक पहुँचाते हैं। ~~आद~~ भाषा के सम्बन्ध में निम्नलिखित पाँच मूलभूत बातें हमारे समक्ष आती हैं: —

(1-) भाषा विचार-विनिमय का साधन होती है, इससे भाषा का प्रयोग करने वाला अपना आशय पाठक या श्रोता तक पहुँचाता है।

(2-) भाषा मनुष्य के विशेष ~~प्रय~~ प्रयत्न द्वारा उच्चारण अवयवों से उत्पन्न ध्वनि समष्टि होती है।

(3-) भाषा में आने वाली ध्वनि - समष्टियाँ तो सार्थक होती हैं किन्तु उनका भावों या विचारों से सम्बन्ध केवल ~~एक~~ 'यादृच्छिक' अथवा माना हुआ होता है।

(4-) भाषा में निश्चय ही एक व्यवस्था होती है। यह आज भी अधिक व्यवस्थित एवं नियमित होती जा रही है।

(5-) एक भाषा का प्रयोग सामान्यतः एक विशेष वर्ग या समाज में ही होता है। उसी में बोला और समझा जाता है।

डॉ० भोलानाथ तिवारी —

"भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित यादृच्छिक (Arbitrary) ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल बालविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

भाषा-विज्ञान —

भारत के लिए भाषा-विज्ञान का वर्तमान रूप कुछ नवीन ही है। आज 'भाषा-विज्ञान' ही अधिक प्रचलित नाम है और यही नाम इसकी मूल आत्मा का परिचायक भी है। यह नाम अन्य नामों की अपेक्षा अधिक व्यापक

एवं सार्थक भी है।

(क) डॉ० मंगलदेव शास्त्री लिखते हैं कि भाषा - विज्ञान उनको कहते हैं जिसमें -

(1-) सामान्य रूप से मानवीय भाषा का,

(2-) किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का, और अन्तत:

(3-) भाषाओं या प्रादेशिक भाषाओं के वर्गों की पारस्परिक समानताओं का तुलनात्मक विचार किया जाता है।

(ख) डॉ० भोलानाथ तिवारी - "जिस विज्ञान के अन्तर्गत ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा (विशेष नहीं अपितु सामान्य) की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक् व्याख्या करते हुए इन सभी के विषय में सिद्धान्तों का निर्धारण हो, उसे भाषा - विज्ञान कहते हैं।"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(ग) डॉ० बाबूराम सक्सेना के अनुसार - "भाषा - तत्वों में इससे आगे बढ़कर निश्चय ही भाषा के विकास आदि पर भी विचार करते हैं। वास्तव में इस परिभाषा में स्वरूप के स्थान पर विषय का प्रतिपादन किया गया है।"

(घ) डॉ० देवेन्द्र शर्मा - "भाषा - विज्ञान की भूमिका में लिखते हैं - भाषा -

विज्ञान का सीधा अर्थ है भाषा - विज्ञान और विज्ञान का अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार का विशिष्ट ज्ञान भाषा - विज्ञान कहलायेगा।"

इसप्रकार कह सकते हैं कि भाषा विज्ञान एक शास्त्र है जो विभिन्न भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अतः स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं कि जब तक अन्य कोई विद्वान अपने ज्ञान से शास्त्र को सटीक एवं पूर्ण रूप से परिभाषित नहीं करता।

14/04/2020

प्राचार्य
मीस मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया